भारत सरकार

परमाणु ऊर्जा विभाग

राज्य सभा

अतारांकित प्रश्न संख्या-1125

उत्तर दिनांक - 01/08/2024 को दिया गया

परमाणु विद्युत संयंत्र

1125. श्री बाबूभाई जेसंगभाई देसाई
श्री केसरीदेवसिंह झाला

क्या प्रधानमंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :-

(क) क्या सरकार ऊर्जा की मांग को पूरा करने के लिए नए परमाणु विद्युत संयंत्र स्थापित करने की योजना बना रही है, यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं;

(ख) उन राज्यों की सूची क्या है जहां प्रस्तावित संयंत्रों की स्थापना की जा रही है;

(ग) आज की तारीख तक देश भर में राज्य-वार कितने परमाणु विद्युत संयंत्र कार्य कर रहे हैं;

(घ) क्या इन संयंत्रों के आस-पास विकिरण के खतरे की किसी घटना की सूचना मिली है; और

(ङ) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और इन चिंताओं को दूर करने के लिए क्या कदम उठाए गए हैं?

उत्तर

राज्य मंत्री, कार्मिक, लोक शिकायत और पेंशन तथा प्रधानमंत्री कार्यालय (डॉ. जितेंद्र सिंह)

(क) व (ख) हां। तमिलनाडु, हरियाणा और राजस्थान राज्यों में 7300 मेगावाट की कुल क्षमता के नौ रिएक्टर निर्माणाधीन हैं। इसके अलावा, तमिलनाडु, कर्नाटक, हरियाणा, राजस्थान और मध्य प्रदेश राज्यों में 8000 मेगावाट की क्षमता के बारह रिएक्टर पूर्व-परियोजना गतिविधियों के अधीन हैं।

(ग) देश में वर्तमान में 8180 मेगावाट की कुल क्षमता के 24 नाभिकीय विद्युत संयंत्र प्रचालित हैं, जिनमें महाराष्ट्र में 04, राजस्थान में 06, तमिलनाडु में 04, उत्तर प्रदेश में 02, गुजरात में 04 और कर्नाटक में 04 शामिल हैं।

(घ) व (ङ) इन संयंत्रों के आस-पास विकिरण जोखिम की किसी भी घटना की सूचना नहीं मिली है। रिएक्टर के कमीशनन होने के पर्याप्त समय पहले ही परमाणु ऊर्जा विभाग के अंतर्गत सभी परमाणु बिजलीघरों के स्थलों पर पर्यावरण सर्वेक्षण प्रयोगशालाएँ (ईएसएल) निर्मित कर दी जाती हैं। पर्यावरणीय नमूनों में रेडियोसक्रियता के अत्यंत निम्न स्तरों का विश्लेषण करने के लिए ईएसएल अत्यधिक संवेदनशील उपकरणों और पर्याप्त बुनियादी ढाँचे से युक्त हैं। ईएसएल संयंत्र-स्थल के आस-पास 30 किलोमीटर की परिधि तक पूर्व-प्रचालन सर्वेक्षण करते हैं ताकि स्थल के आसपास पूर्व-प्रचालन बेसलाइन रेडियोसक्रियता स्तरों को स्थापित किया जा सके। रिएक्टर की प्रचालन अवधि के दौरान, पर्यावरणीय नमूने जैसे हवा, पानी, मिट्टी, वनस्पति, कृषि उत्पाद, दूध, मांस और अन्य आहार उत्पाद समय-समय पर एकत्र किए जाते हैं और आस-पास के पर्यावरण और जनता पर संयंत्र के प्रचालन के प्रभाव का आकलन करने के लिए इन नमूनों में रेडियोसक्रियता का विश्लेषण किया जाता है। पर्यावरणीय नमूनों में रेडियोसक्रियता के स्तर की तुलना संबंधित मैट्रिक्स में पूर्व-प्रचालन मूल्यों से की जाती है। विभिन्न नाभिकीय विद्युत संयंत्र (एनपीपी) स्थलों पर किए गए अध्ययनों से स्पष्ट संकेत मिलता है कि पर्यावरण में अस्वीकार्य स्तर पर रेडियोसक्रियता मौजूद नहीं है।

*****